

उकार्यसाधनजयविनीयाग॥ कुंनम
रुगवगन्रीजनयायह॥ नूददुल्लय
॥ वासुसुतायलिल्ला॥ गनिगकूय
कय॥ नामंदूगायनं॥ वद्वामुनि
यानल्लयनूमायह॥ धनि॥ कुंवा

धमरल आचाय सुरत श्री महाबहार II-81

मं कल वेनी विडु न रु नीम नैयु लै मृ क न
हा निरु क थ आस मा कृ क्क य कुरु ड दान
क दाल मा न नैय ॥ ॥ कु न मारु ग व नैरु
नैमा न डाय यु क न वि क म कानि सु क न
दि गं नै यु नाय ॥ ॥ सु ना नु य व नी क न

मा ह भव क न वे ना न क न व न ना क न
क न ग क्क क थ क ह क ग्ग क ह क वा ड
थि क प च न ग वि ष म क न व क न ना क
स व ना न या र म हा ग न ति मा त इ न र
य र ॥ ॥ कु न मारु ग व न प च व क ड ग

[illegible]

तं ॥ हा वषट् वं जूं ऊ नी यं रु न्ठ म न्क म
 हा ना मं । तस्य वा वं य नो यं नं चि नं म्
 ख म हा वा हा ॥ म हा ना ख ह नो ह नं ह
 नू म न्क म हा धा नी नं का दा रु नं मं व य
 वि हि ष हं य जू रु यं कू जा णि ॥ ना म ल न्क
 ल या नं का वा लि म द न म दि नं । स या

दासनधि युग ४०॥ कुं न मा रुग व न रु नृ म
द गोय, य केत, विकत, मेहा विक म
य, सकल दि भ धु ला य, ॥ गी हिता न ध व
लि क्त, ज ग वि त य, य ज द ह न दा व ता
न, वा यू य नो य, न का य नी दा रु ने दी य न
उ दे धि व न न, द श नि व, क ता न क, गी

गा स मा न, स्वा स न, म ठ नी ग रु, स उ न
ली ना म, ले क, धा य, नू न क न क, प व स
न य रु ज ना य, स्व स न न क मो य, स गी व
गा य ना य, य द ता त्या न न, क मा ल व क
वा नि ध, गी हि न स्व न, स द ग रु, नि वा न व
कुं का रु र हो र ग हि र य क रु य, वि र स

ॐ
 ॐ
 एहि २ दं व रु यं, अरु न रु यं, ग न्य व रु यं,
 य क्रु रु यं, व क्रु ना क्रु रु यं, उ रु रु यं, ॐ
 त रु रु यं, यि मा च रु यं, वा व य २ ना क्रु रु यं,
 वी रु रु यं, ग रु रु यं, रु यं रु यं, न रु रु
 यं, य क्रु रु यं, कि रु रु यं, क रु रु यं,

II-81

धर्मरत्न बजाचार्य सुत श्री महाविहार

खादय २ ॥ कुं न मात गवत यंच वकु हन्
मत ज मादा थय कन का प्र (६) यदि ३ वल
बन्त ह माता इव ज उ तानी गो कि नी ना
ज कि पी ला वतान वन्त ना कर कृष्ण
छा ६ ॥ विषम इक्षानी विषम विस
॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ गुलगा

ष जातान रुय हने र म थ र रु दय २ मा
लय २ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
कुं न मात गवत यंच वकु हन् मत ॥ १ ॥ १ ॥
ना व न्य वि मा द ला य उ मा म ह न्य न ता उ
स हि मा व ता न स च वि धा कृ द न स च

हय। ध्यानं सर्वकामाकादनं सर्वरुच्य
हज्जन २॥ हनं मातृ गवतं यच्चैव कुरु
ठ मातं कवल्लोद गोके मधुल उत मधु
ल प्रत मधुल पिमा व मधुल निमा
नन हत कल प्रत कन पिमा व कल

हान ना ज च। च क वान न्य व द व क यि वा
उ न मातृ ॥ ३० ॥ ०० नि मा रु ना ये ध वि न
यि मा या ला रु न रु न व मा री स मा र्फ ४॥

॥ श्री उग्रवधु देव्यै ॥ ॐ नमो नमो उग्रवधु
महाराज कनीमालामने नमो महाराज देव्यै
किं के नन्द उग्रवधु देवता की वीर्य सुनी किं ४
हूँ किलक नमो विजय सिद्धि धन यै वि
नियोग ॥ ॐ नमो नमो उग्रवधु ॥ ॐ नमो नमो ॥

श्रीः ॐ नमो नमो उग्रवधु देवता की वीर्य सुनी किं ४
नमो नमो नमो उग्रवधु देवता की वीर्य सुनी किं ४
सर्वस्व देवि नमो नमो उग्रवधु देवता की वीर्य सुनी किं ४
यद्यपि नमो नमो उग्रवधु देवता की वीर्य सुनी किं ४
महामाया उग्रवधु देवता की वीर्य सुनी किं ४
राम ४ महाराज देवता की वीर्य सुनी किं ४